International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ.पी.डी. शर्मा (प्राचार्य रामकृष्ण इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, रायपुर)
डॉ.सुनीला शर्मा (विभागाध्याक्ष, रामकृष्ण इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, रायपुर)

सारांश

ईश्वर की रचना में मनुष्य समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ कृति है क्योकि उसके पास बृद्धि रूपी मणि है और उस मणि की सहायता से ही नेतृत्व गुणों से परिचित होकर स्वयं तथा समूहों का नेतृत्व कर अपनी एक अलग जगह बनाता है। विद्यालय में शिक्षक के द्वारा समय–समय पर नेतृत्व करने का अवसर विद्यार्थियों को देते रहना चाहिए। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में आंकड़ों के संकलन के लिए सी.एस. राठौर (जबलपुर) नेतृत्व गुण मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त न्यादर्श के आंकड़ों के आधार पर हमारी परिकल्पना सिद्ध होकर स्वीकृत होती है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व गुणों में कोई अंतर नहीं है।

प्रस्तावना–

नेतृत्व, नायकत्व एवं मार्गदर्शक ये सभी हमें यह समझाते हैं कि अपने आदर्श व्यवहार के द्वारा जनसमूहो को प्रभावित करते हुए उसे भी आदर्श स्थिति तक पंहुचाना। नेतृत्व की शक्ति तभी प्राप्त होती है जब व्यक्ति के व्यक्तित्व में बहुत से गुणों का संगठन समाहित होगा, तब यह इतना प्रभावशाली हो जाता है कि पूरे समूह को अपने प्रभाव में लेकर उसे उद्देश्यात्मक गति प्रदान कर सकता है। इस शक्ति को प्राप्त करके व्यक्ति , नेता, नायक तथा मार्गदर्शक के भूमिका में आ खड़ा होता है और वह अपने संचालन से समूह के सदस्यों को अपने उद्दीपन द्वारा दूरदर्शिता, आत्मविश्वास, संकल्प शक्ति को बढ़ाकर उत्कृष्ट समाज का निर्माण कर सकता है। सृष्टि के आरंभ से ही नेतृत्व शक्ति की प्रधानता रही है। चाहे वह आसूरी शक्ति हो चाहे दैवीय शक्ति। उन सबका नेतृत्व कोई न कोई व्यक्तित्व करता हुआ दिखाई पड़ता है। समाज के सदस्यों को उचित गति–मति प्रदान करने का कार्य नेतृत्व शक्ति के द्वारा होता है। विलक्षण गुणों से आच्छादित नेतृत्व शक्ति समग्र को प्रभावित करती है।इसलिए शिक्षा क्षेत्र मे यह प्रयास होना चाहिए कि उस शक्ति का विकास शैक्षणिक कार्यों में सम्पन्न कराया जाए। नेतृत्व के बीज (विश्वास, संकल्प, संतुलन, नियंत्रण, उद्दीपन, आत्मविश्वास, धैर्यता, संचालन) आदि को विद्यालय के माध्यम से उचित धरा प्रदान करके विकसित किया जाए क्योंकि ये ही वो केन्द्र बिन्दु हैं जिनमें नेतृत्व शक्ति के नव अंकुरणों को पहचाना और चिन्हित किया जा सकता है तदुपरांत शिक्षा के कौशलों के माध्यम से उसे संवारा जा सकेगा।

धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिकता के क्षेत्रों में कार्य करते हुए कुशलता से नेतृत्व गुणों का विकास किया जा सकता है और इसी के द्वारा राष्ट्र और समाज को एक कुशल नेतृत्वकर्ता या नायक प्रदान किया जा सकता है। वर्तमान समय में नेतृत्व शक्ति का ह्रास होता दिखाई दे रहा है। आरंभ में जो नेतृत्व गुण परिलक्षित होते थे। वे अब धीरे–धीरे क्षीण होते जा रहे हैं यह चिंता का विषय है। आज शिक्षा को इसकी सम्पूर्ण जवाबदारी लेनी होगी क्योंकि यही वह सशक्त माध्यम है जो नेतृत्व गुणों को पोषण प्रदान कर सकती है। जो राष्ट्र और समाज प्रगति के पथ पर सबसे आगे है उनकों लगातार नेतृत्व शक्ति प्राप्त हो रही है। नेतृत्व गुणों में वह चुंबकीय गुण विद्यमान होते हैं जो सम्पूर्ण समूह को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उसे अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए बाध्य करती है। प्रसिद्ध पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक फ्रायड महोदय का कथन है कि ''अहं–आदर्श'' ही नेतृत्व का जन्म है। जब अहं का विकास होता है तो वह अहं किसी अन्य अहं को अपना आदर्श निर्धारित करता है और उसके अनुरूप किया व्यवहारों का उत्सर्जन करते हुए वैसा बनने की चाह लिए चलना चाहता है और इसी आदर्श अहं को हम नेतृत्व गुण की संज्ञा देते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिभाषा –

काटज और काहन के अनुसार –

'' नेतृत्व एक प्रभाव है जिसमें जो भी व्यक्ति नेता की स्थिति में विराजमान है, वह अन्य व्यक्तियों को प्रभावित करता है''

चेस्टर बर्नार्ड के अनुसार –

'' नेतृत्व वह व्यवहारगत गुण है जिससे वह अन्य व्यक्तियों या उनकी क्रियाओं को निर्देशित करता है''

अध्ययन के उद्देश्य –

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण की तुलना का अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की छात्राओं के नेतृत्व गुण की तुलना का अध्ययन करना।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के नेतृत्व गुण की तुलना का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की छात्राओं के नेतृत्व गुण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के नेतृत्व गुण में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

सीमांकन –

प्रस्तुत शोध अध्ययन दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय तक सीमित है।

विधि –

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में शामिल किया है।

न्याद f

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी ने शासकीय पं. जवाहर लाल नेहरू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, न्यू खुर्शीपार, भिलाई एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर, न्यू खर्शीपार भिलाई दुर्ग जिले से 32 विद्यार्थियों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा किया है।

शोध **उपकरण –**

शोधार्थी ने शोध हेतु विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण का पता लगाने के लिए सी.एस.राठौर भूतपूर्व प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष शारीरिक शिक्षा विभाग रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर एवं चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट नेतृत्व गुण मापनी का प्रपत्र उपकरण के लिए चयन किया है।

विश्लेषण –

तालिका नं. – 1

परिकल्पना : शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात मूल्य	सार्थकता
शासकीय	26.43	2.68	0.61	0.05 स्तर पर सार्थक
अशासकीय	26.06	3.28		

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 26.43 तथा **SD** 2.68 पाया गया एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 26.06 तथा **SD** 3.28 पाया गया । शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का टी मूल्य मान 0. 61 पाया गया जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका का मान 1.96 से कम है अतः हमारी परिकल्पना सि़द्ध होती है।

तालिका नं. – 2

परिकल्पना : शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की छात्राओं के नेतृत्व गुण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात मूल्य	सार्थकता
शासकीय	26.25	6.63	0.70	0.05 स्तर पर सार्थक
अशासकीय	27	2.64		

शासकीय विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 26.25 तथा **SD** 6.63 पाया गया एवं अशासकीय विद्यालय की छात्राओं का मध्यमान 27 तथा **SD** 2.64 पाया गया । शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की छात्राओं का टी मूल्य मान 0.70 पाया गया जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका का मान 1.96 से कम है अतः हमारी परिकल्पना सि़द्ध होती है।

तालिका नं. – 3

परिकल्पना : शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों के नेतृत्व गुण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

विद्यार्थी	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात मूल्य	सार्थकता
शासकीय	26.62	1.06	0.53	0.05 स्तर पर सार्थक
अशासकीय	26.37	0.86		

शासकीय विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 26.62 तथा **SD** 1.06 पाया गया एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों का मध्यमान 26.37 तथा **SD** 0.86 पाया गया । शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के छात्रों का टी मूल्य मान 0.53 पाया गया जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित तालिका का मान 1.96 से कम है अतः हमारी परिकल्पना सिद्ध होती है।

निश्कर्श–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आंकड़ों के परिणामों से ज्ञात हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नेतृत्व गुण में कोई भेद या अंतर नहीं है। अतः नेतृत्व गुण की उर्वरा हर क्षेत्र में सामान्य रूप से विद्यमान है।

सुझाव–

विद्यालय में छात्र जीवन से ही शिक्षक के द्वारा नेतृत्व ग्रहण करने के लिए विद्यार्थियों को भरपूर अवसर दिया जाना चाहिए एवं विद्यार्थियों को बहुपक्षीय गतिविधियों जैसे –(साहित्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल–कूद, कक्षा प्रतिनिधि, शाला प्रतिनिधि, झण्डारोहण) आदि में संलग्न कर उन्हें काम करने के व्यापक अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। इसके अलावा शिक्षक को समय–समय पर विद्यार्थियों से सुझाव आमंत्रित करके शिक्षण में विद्यार्थियों के साथ संगठनात्मक मामलों पर वार्तालाप और चर्चाएं भी करनी चाहिए।

संदर्भित ग्रंथ –

कपिल एच. के (2006) : अनुसंधान विधियां आगरा एच. पी. भार्गव बुक हाउस।
शर्मा आर ए. (2006) : शिक्षा प्रशासन एवं प्रबंधन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
तोमर डॉ. गजेन्द्र सिंह (2017) : शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंधन, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
सुखिया एस.पी., माथुर के.पी. (2018) : शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय प्रबंधन, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।